(14)

IIJ Impact Factor : 2.193 ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोध पत्रिका

(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

वर्ष-६ अंक-१२ भाग-४

जुलाई-दिसम्बर, २०१९

प्रधानसम्पादक

डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक

वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी

वाराणसी

- किरातार्जुनीये तद्धितवृत्तेरर्थवैज्ञानिकत्वम् 220–228
  मनीषकुमारझा
- मध्यकालीन स्त्री–लेखन व अभिव्यक्ति के स्वर 229–232
  पूनम प्रसाद
- हठयोग में कुण्डलिनी का स्वरूप 233–236
  सूरज प्रकाश जोशी
- शृङ्गारस्य सर्जनात्मकमध्ययम् 237–240
  Dr. Menakarani Sahoo
- वर्तमान परिदृश्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता 241–244
  जय प्रकाश विश्वासी
- प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक चित्रण 245–249
  निधी कुमारी
- अरुण कमल की जनपक्षधरता : 'पुतली में संसार के संदर्भ में 250–254
  पूनम कुमारी
- हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भंडारी के उपन्यासों का योगदान 255–257
  अनिल कुमार यादव
- शैव दर्शन में प्रमाण चिन्तन का स्वरुप 258–263
  अश्विनी कुमार
- संस्कृत चम्पू साहित्य एवं बिहार 264–266
  डॉ0 आभा तिवारी
- गीताशांकरभाष्य में ज्ञान का स्वरूप 267–270
  डॉ0 अनीता लोचिब
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वराज्य दल का योगदान 271–273
  डॉ0 कंचन कुमारी
- गीतशङ्करकाव्योपरिगीतगोविन्दस्य प्रभावः समीक्षणम् 274–276
  डॉ0 अर्चना कुमारी
- विवेकानंद और वेदांत 277–283
  डॉ0 शशि रंजन त्रिपाठी
- योग अंतराय एवम् चित्त प्रसाधन के उपाय 284–288
  Bhavika Joshi & Dr. Brijesh Singh
- ग्रन्थसम्पादनशास्त्रस्य प्रमुखलक्षणानि 289–290
  विदुषि सुवर्णा हेगडे व Dr. Vinaykacharya Namannavar
- संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार सिद्धांत 291–293
  डॉ0 कनक लता कुमारी
- वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधिः 294–305
  डॉ0 रश्मिचतुर्वेदी
- 'पाँच आँगनों वाला घर' और भूमंडलीकरण 306–311
  रेखा साह

वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधिः

डॉ0 रश्मिचतुर्वेदी*

वास्तुशास्त्रस्य ग्रन्थेषु भवने कक्षनिर्माणं दिशः स्वाभावानुसारं गुणधर्मानुसारं च तस्याः प्रकृतिवत् गतविधिं सशक्तं निर्माय तथा च व्यवस्थितरूपेण सञ्चालनाय उपयुक्तं स्थलं कथ्यते। वस्तुतः वास्तुशास्त्रं प्रत्येकं दिशि प्रकृतेः एवञ्च तस्याः गुणधर्मणाम् अधिकतमोपयोगाय तस्याः दिशः सम्मतकक्षव्यवस्थायाः निर्देशं प्रददाति। यस्याः प्रभावेण मनुष्यैः स्व-समस्तगतिविधीनां व्यवस्थापनं सम्यग्रूपेण कर्तुं शक्यते।

वास्तुपुरुषः सदैव भूमौ निवसति इयमस्माकं मान्यता अस्ति। एकस्मिन् वर्गाकारे (मण्डले) वास्तुपुरुषस्याकृतिः अनेन प्रकारेण स्थितं मन्यते यत् ईशानकोणे (उत्तरपूर्वदिशोः) तस्य शिरः, नैऋत्यकोणे (दक्षिणपश्चिमदिशोः) पादौ, शरीरस्य अन्ये भागाश्च अस्मिन्नेव वर्गे विभिन्नभागेषु अवस्थिताः वर्तन्ते। पञ्चचत्वारिंशद्देवताः वास्तुपुरुषं गृहीत्वा अस्यां स्थितौ स्थापयन्तः सन्ति, स्व-स्वस्थितेः अनुसारं विभिन्नक्षेत्राणां नियन्त्रणं कुर्वन्ति। वर्गः (मण्डलः) लघुकायः दीर्घकायो वा भवेत्, उपविभागाः चतुःषष्टिः एकाशीतिः वा भवेयुः परमस्य नियन्त्रणकर्तृणां देवतानां संख्या सदैव पञ्चचत्वारिंशदेव भवति। तेषां सापेक्षिकस्थितिः अपि सैव भवति, केवलं तस्य क्षेत्रविस्तारोऽधिको जायते। एतेषु महत्त्वपूर्णप्रमुखदेवताः वर्तन्ते ये मुख्यदिशामधिपतयः तस्य क्षेत्रस्य नियन्त्रणकर्तारश्च वर्तन्ते। ते च -

देवताः	दिक्पतयः	कारकाः (नियन्त्रणम्)
इन्द्रः	पूर्वा	समग्र-समृद्धिः उन्नतिश्च
अग्निः	आग्नेया	अग्निः तेजश्च
यमः	दक्षिणा	मृत्युः
दानवः	नैऋत्या	शुद्धता स्वच्छता च
वरुणः	पश्चिमा	जलं वर्षा च
वायुः	वायव्या	वायुः
कुबेरः	उत्तरा	धन-सम्पत्तिः समृद्धिश्च
ईश्वरः	ईशाना	धर्मः आराधना मोक्षश्च
ब्रह्मा	मध्यभागः	सृष्टेः जनकः अध्यात्मज्ञानञ्च

इमे देवताः स्व-स्वक्षेत्रस्य अधिपतिरूपेण विराजन्ते। सौरमण्डले स्थिताः वातावरण-प्रकृत्योः अनुसारं विभिन्नावयवानां प्रतीकस्वरूपाश्च विद्यन्ते। अतः तेषामवयवानां नियन्त्रणकर्तारः मन्यते। एतदर्थं भवनं निर्मातुं भूखण्डस्य चयनसमये, गृहनिर्माणकार्यारम्भादिषु अवसरेषु देवतानां महत्ताः स्मर्यन्ते। तथैव गृहे विविधकार्याणां कृते भिन्न-भिन्नप्रकोष्ठाः एतादृश्यां दिशि विशिष्टस्थितौ च निर्माणीयाः यत् तेन कार्येण तत्क्षेत्राधिपतिः देवता रुष्टं न भवेत् प्रत्युत् प्रसन्नं भूत्वा स्व-नियन्त्रस्य सर्वासां भौतिकवस्तूनाम् ऊर्जानां वा लाभः गृहस्वामिने प्रदद्युः, येन कारणेन सः परिवारेण साकं गृहे सुखपूर्वकं वसितुं शक्नुयात्। यस्याः दिशाधिपतिः या देवता तस्य नियन्त्रणे यः पदार्थः ऊर्जा वा अस्ति तस्य स्वभावानुसारं प्रकृत्यानुसारञ्च कस्यां दिशि कस्मै कार्याय प्रकोष्ठः कस्यां स्थितौ निर्माणीयः, कस्यां स्थितौ च न निर्माणीयः, अस्य स्पष्टोल्लेखः प्राचीनशास्त्रेषु प्राप्यते। अनेन सहैव यदि कश्चन प्रकोष्ठः निषिद्धक्षेत्रे निर्मीयते चेत् तस्य सम्भावितदुष्परिणामाः अप्युक्ताः वर्तन्ते। विश्वकर्माप्रकाशे कथ्यन्ते-

*प्रवक्ता-आचार्या ज्योतिष-विभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

प्रधान सम्पादक
प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक-
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१६

ISSN : 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण – २०१९

मूल्य २००/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली-११००१६
९८११६६३३९१/९३

12. द्वार, गवाक्ष, वरामदा एवं आँगन का विचार (भारतीय वास्तुशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में)	प्रो. हंसधर झा अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर	93–109
13. श्रौतवेदी के निर्माण में वास्तुसिद्धान्त	विद्यावाचस्पति डॉ.सुन्दरनारायणझा सहाचार्य, वेदविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	110–116
14. वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार	डॉ. रश्मि चतुर्वेदी सहाचार्या (ज्योतिष विभाग) श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	117–129
15. लक्ष्मीनारायण मन्दिर दिल्ली का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन	डॉ.देशबन्धु सहायकाचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16 प्रिया कौशिक शोध-छात्रा, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	130–145
16. देवालय और उनके शिखर विधान	डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' वास्तुशास्त्रविद्, विश्वाधारम्, 40 राजश्री कॉलोनी विनायकनगर, उदयपुर–313001 राजस्थान	146–155
17. शिक्षण विधियों में नवाचार: वास्तुशात्र के सन्दर्भ में	डॉ ज्ञानेंद्र कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय	156–163
18. प्रासाद निर्माण में शिखर विधान	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा सहायकाचार्य, ज्योतिष विभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा।	164–170

वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

दिक् सम्मत भवन की स्थिति और विन्यास का उसमें निवास करने वालों के जीवन पर सीधा और स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। आदि काल से हमारे ऋषि मुनियों ने इन प्रभावों का अध्ययन किया है और संचित अनुभवों को वेद-पुराण आदि शास्त्रों में वर्णित किया है। इस ज्ञान को 'वास्तुशास्त्र' कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तु के नियमानुसार बने भवन में निवास करने से स्वास्थ्य व सम्पदा की वृद्धि, ज्ञान की प्राप्ति, सन्तान सुख की प्राप्ति होती है, जीवन सुखी एवं शान्तिमय बनता है तथा व्यक्ति समस्त ऋणों से मुक्त रहता है शास्त्रों की सम्मति की उपेक्षा करने से अनावश्यक यात्राओं, अपयश, अनेक दुखों व निराशाओ का सामना करना पड़ता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" वैदिक उद्घोष का पालन करते हुए समस्त लोक के कल्याण एवं सुख समृद्धि की कामना के साथ सभी ग्राम, नगर एवं भवन वास्तुशास्त्र के नियमानुसार बनाने की परिकल्पना इस शास्त्र का प्रमुख उद्देश्य है। यथा–

सुखं धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानृणाम्।
प्रियान्येषां च संसिद्धिं सर्वं स्यात् शुभलक्षणम्।।
यात्रा निन्दित लक्ष्यमत्र तहि तेषां विघातकृत।
अतः सर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभलक्षणम्।।
देशः पुरनिवासश्च समा वेश्मासनानि च।
यद्यदीदृशमन्यच्च तत्तच्छ्रेयस्करं मतम्।।
वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्याल्लक्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृप्या शास्त्रमेतदुदीर्यते।।[1]

भू परिग्रह से तात्पर्य है "भूमि का परिग्रहण अर्थात् उचित भूमि का चयन करना।" किसी भी नगर, ग्राम अथवा भवन के लिए सर्वप्रथम भूमि का चयन किया जाता है। भूमि की उपयुक्तता के लिए सर्वप्रथम भूमि का परीक्षण किया जाता है, इस परीक्षण में इसके कुछ दोष दृष्टिगोचर हो तो इन दोषों को दूर करने के लिए वास्तुशास्त्रोक्त विधि से भूमि का शोधन किया जाता है भूमि के आकार, वर्ण एवं शब्दादि के आधार पर उत्तम प्रकार से विद्वान स्थपति से परीक्षण करवा कर भूमि परिग्रहण का निर्देश वास्तुशास्त्र में दिया गया है। यथा–

---

1. स.सूत्रधार प्र.अ. श्लोक-2, 3, 4, 5

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-शनि

विक्रम संवत्-२०७६
शक-संवत्-१९४१

मन्त्री-सूर्य

भा०गणराज्य-संवत् ७२-७३
ईशवीय-सन् २०१९-२०२०

विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ३७

संवत्सर - परिधावी

मूल्य रू. ५०/-

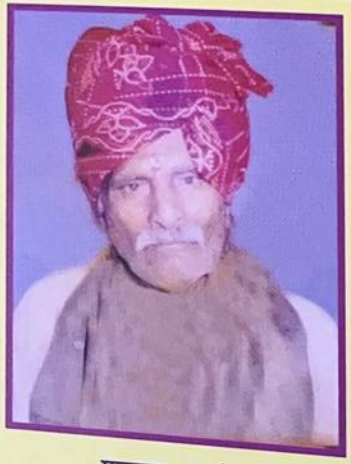

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

प्रधान-सम्पादक
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्गसंकाय

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

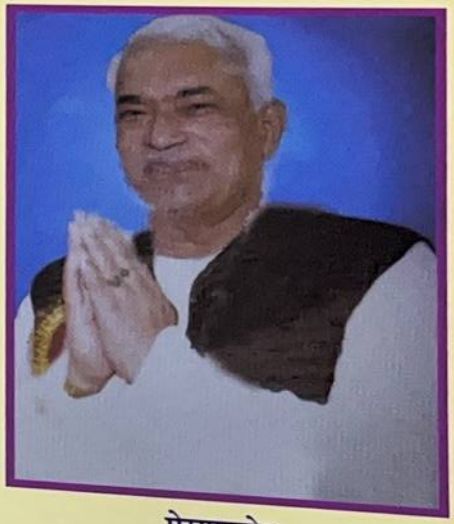

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा 'आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष'
2. प्रो. नीलम ठगेला 'आचार्या, ज्योतिष-विभाग'
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
5. डॉ. सुशील कुमार 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
7. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित-विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विद्यापीठ, नई

संक्षिप्त-परिचय

भारत की राजधानी दिल्ली में एक
की पूर्ति के लिए

◈ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◈

संक्षिप्त-परिचय	१
प्रस्तावना	२-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४
संवत्सरादि फल	५-१३
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल	१४-१६
आय-व्यय बोधक चक्र	१७
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	१८-३४
विं० संवत् २०७६ के व्रत-पर्व एवं उत्सव	३५-४५
विं० संवत् २०७६ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	४६-४७
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि० सं.-२०७६	४८-४९
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त	५०
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर-अमृतसिद्धि, सिद्धियोग एवं अमृतयोग	५१-५८
वि.सं. २०७६ दैनिक राहुकाल सारिणी	५९-६२
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी	६३-६६
वि० संवत् २०७६ के ग्रहण का विवरण	६७-६९
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि० संवत् २०७५	७०-७२
वि.सं. २०७६ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों का विवरण	७३
वि.सं. २०७६ के विवाहादि मुहूर्त्त	७४-८५
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	८६
विक्रम-संवत् २०७६ का पञ्चाङ्ग	८७-११०
वि० संवत् २०७६ के दैनिक स्पष्ट ग्रह	१११-१२२
दैनिक लग्न सारिणी	१२३-१२९
षड्वर्ग-चक्र	१३०-१३१
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१३२
विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र	१३३

◈ विषय-सूची ◈

नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१३४
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र	१३४
वर्षफल निर्माण-विधि	१३५
लग्नसारिणी अक्षांश	१३६-१४१
दशमलग्नसारिणी	१४२
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र, अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास	१४३
विविध मुहूर्तों का विचार	१४४
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त	१४४
जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन का मुहूर्त्त-विचार	१४५-१४६
अन्नप्राशन,कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार	१४३
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार	१४७
उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१५८
वर-कन्या का जन्मपत्रिका मेलापक, दुष्टभकूट, गणकूट, ग्रहकूट का परिहार	१४९
नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण का मुहूर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि	१५०
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार	१५१
जन्माक्षर-चक्र	१५२-१५४
मेलापक-सारणी	१५५-१५८
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार	१५९
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार	१६०
चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार	१६१-१६२
राहुमुखज्ञान, गृहारम्भ विचार	१६२
चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र	१६३
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र, कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त	१६४
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त	१६५-१६६
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त	१६६
ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, जपनीय-चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त, बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र, औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त	१६८
मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	१६८
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर	१६९-१७०
लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि	१७०
लघुरित्थ सारिणी	१७१-१७२
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि	१७३-१७४
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	१७५
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल	१७६

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवताराः। त्रेतायुगप्रमाणं १२९६०००
युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवताराः। द्वापरयुगप्रमाणं
४९४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२०००
ऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२०
८२२ वर्षावशेषकाले

नमः

चतुर्दशी में यह पर्व मनाते हैं। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष एवं निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो उसी दिन विष्णुभक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। यथा-

केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तदव्याप्तौ निशीथप्रदोषोमयव्यापिनी ग्राह्येत्याहुः।। (धर्मसिन्धुः)

द्वितीय परम्परानुसार प्रथम दिन व्रत करके अरूणोदयव्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजन करके प्रातःकाल पारणा करने का विधान है। इस परम्परा के अनुयायी अरूणोदयव्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो उस दिन उपवास करते हैं और उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरूणोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरूणोदय में पूजन करना चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का स्पर्श न करे तो चतुर्दशी तिथि वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजन करना चाहिए और पूजन से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। यथा-

पूर्वेद्युरूपवासं कृत्वा अरूणोदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य, प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च चतुर्दशीयुक्तारूणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः उभयत्रारुणोदयव्याप्तौ परत्रारूणोदये पूजा, पूर्वत्र उपवासः। उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्रे एव अरूणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च। (धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष दिनांक १० नवम्बर २०१९ को चतुर्दशी प्रदोष एवं निशीथ व्यापिनी है अतः विष्णु पूजा एवं व्रत इसी दिन होगा। शिवभक्त भी इसी दिन अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी के दिन व्रत कर अरुणोदय में शिवपूजा करके ११ नवम्बर, २०१९ ई. को प्रातः पारणा करना शास्त्र सम्मत होगा।

संकष्ट चतुर्थी व्रत- (१३ जनवरी, २०२० ई. सोमवार)

संकष्ट चतुर्थी का व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी माघ कृष्ण चतुर्थी वाले दिन मनाने का विधान है। तृतीयायुता चतुर्थी शास्त्रानुसार प्रशस्त मानी गई है। यथा-

चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।।

इस निर्णयानुसार इस वर्ष दिनांक १३ जनवरी, २०२० ई. को तृतीया चतुर्थी विद्धा है तथा चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी भी हैं। अतः इस दिन संकष्टचतुर्थी का व्रत करना श्रेष्ठ होगा।

वसन्त पंचमी- (३० जनवरी, २०२० ई. गुरुवार)

माघ शुक्ल पंचमी को वसन्तपंचमी कहते है। इस दिन विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की पूजा अर्चना विशेष रूप से की जाती है तथा वसन्तोत्सव का आरम्भ भी इसी दिन होता है। यथा-

माघशुक्लपंचमी वसन्त पंचमी तस्या वसन्तोत्सवारम्भः।। (धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष ३० जनवरी,२०२० ई. को पंचमी तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी है तथा औदयिक भी है। अतः इस दिन वसन्तपंचमी का पर्व मनाना शास्त्र सम्मत होगा।

महाशिवरात्रि व्रत- (२१ फरवरी, २०२० ई. शुक्रवार)

महाशिवरात्रि का व्रत निशीथव्यापिनी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को करने का विधान है। इस वर्ष यह तिथि दिनांक २१ फरवरी, २०२० को निशीथव्यापिनी है, अतः इस दिन व्रत करना प्रशस्त होगा।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

विक्रम संवत् २०७६ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों के लिए काल शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माङ्गलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ शुक्रवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार तदनुसार ८ नवम्बर, २०१९ से १२ नवम्बर, २०१९ तक भीष्मपञ्चक रहेंगे जो माङ्गलिक कार्यों में त्याज्य हैं।

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-बुध

विक्रम संवत्-२०७७
शक-संवत्-१९४२

मन्त्री-चन्द्र

भा०गणराज्य-संवत् ७३-७४
ईशवीय-सन् २०२०-२०२१

विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ३८

संवत्सर - प्रमादी

मूल्य रू. ५०/-

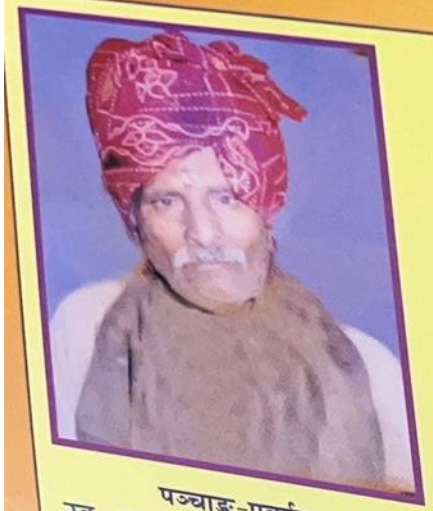

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

प्रधान-सम्पादक
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक :
प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्गसंकाय

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा 'आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष'
2. प्रो. नीलम ठगेला 'आचार्या, ज्योतिष-विभाग'
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
5. डॉ. सुशील कुमार 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
7. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'

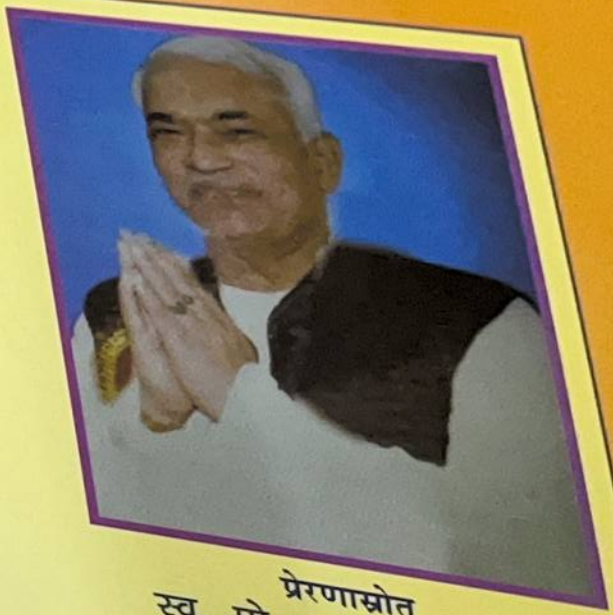

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित-विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत-विद्यापीठ

संक्षिप्त-परिचय

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृत-संस्था...
की पूर्ति के लिए स्वर्गीय ''प्रधानमन्त्री श्री लालबहा...
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मे...
संस्कृत विद्यापीठ की...

तब से ह...

◈ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◈ ◈ विषय-सूची ◈ ◈ विक्रम संवत् २०७७ ◈

संक्षिप्त-परिचय १
प्रस्तावना २-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची ४
संवत्सरादि फल ५-१३
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल १४-१६
आय-व्यय बोधक चक्र १७
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल १८-३७
विं० संवत् २०७७ के व्रत-पर्व एवं उत्सव ३८-४७
विं० संवत् २०७७ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची ४८-४९
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि० सं.-२०७७ ५०-५१
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त ५२
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर-अमृतसिद्धि, सिद्धियोग, अमृतयोग एवं रवियोग ५३-६१
वि.सं. २०७७ दैनिक राहुकाल सारिणी ६२-६५
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी ६६-६९
वि० संवत् २०७७ के ग्रहण का विवरण ७०-७१
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि० संवत् २०७७ ७२-७६
वि.सं. २०७७ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों का विवरण ७७
वि.सं. २०७७ के विवाहादि मुहूर्त्त ७८-८९
गण्ड-मूलादि जन्म विचार ९०
विक्रम-संवत् २०७७ का पञ्चाङ्ग ९१-११६
वि० संवत् २०७७ के दैनिक स्पष्ट ग्रह ११७-१३०
दैनिक लग्न सारिणी १३१-१३७
षड्वर्ग-चक्र १३८-१३९
विंशोत्तरीदशा सारिणी १४०
विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र १४१
नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी १४२
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र
वर्षफल निर्माण-विधि १४३
लग्नसारिणी अक्षांश १४४-१४९
दशमलग्नसारिणी १५०
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र,
अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास १५१
विविध मुहूर्तों का विचार
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त १५२
जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन क मुहूर्त्त-विचार १५२-१५४
अन्नप्राशन,कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार १५५
उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार १५६
वर-कन्या का जन्मपत्रिका मेलापक, दुष्टभकूट, गणकूट, ग्रहकूट का परिहार १५७
नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण का मुहूर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि १५८
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार १५९
जन्माक्षर-चक्र १६०-१६२
मेलापक-सारिणी १६३-१६६
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार १६७
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार १६८
चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार १६९-१७०
राहुमुखज्ञान,
गृहारम्भ विचार, चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र १७१
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र,
कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त १७२
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त १७३
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त
जपनीय- चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त,
बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र,
ग्रहों के दान समय, जपसंख्या,
औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त १७४-१७५
मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र १७६
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर १७७-१७८
लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि
लघुरित्थ सारिणी १७९-१८०
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि १८१-१८२
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार १८३
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल १८४

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः

श्रीवाग्देवतायै नमः

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च

सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।
पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥
पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।
पञ्चसृष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद् ध्वजारोपणम्
स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ।
देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः
सम्पूज्यो गणकः फलञ्च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवतारः। त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवतारः। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२१ भोग्यवर्षाणि ४२६८७९ । कलियुगस्य ८२२ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारः स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमप्रहरे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ० पुण्यं २०। वैशाखशुक्लतृतीयायां चन्द्रे रोहिणीनक्षत्रे द्वितीयप्रहरे शोभनयोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ५ पुण्यं १५। माघकृष्णामावस्यायां शुक्रे तृतीयप्रहरे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयान्योगे द्वापरोत्पत्तिः। तत्र पापं १० पुण्यं १०। भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां रवौ कृत्तिकानक्षत्रे व्यतीपातयोगे निशीथे

अधिकमास मास में त्याज्य कर्म- आचार्य गर्ग के अनुसार अधिक मास में अग्नयाधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, व्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, व्रतबन्ध, देवीतीर्थों में गमन, विवाह, अभिषेक, यान और घर के काम अर्थात् गृहराम्भादि शुभ कार्य नही करने चाहिए। यथा-

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्गचूडाकरण मेखलाः।।
गमनं देवतीर्थानां विवाहमभिषेचनम्।
यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।।

अधिकमास में करणीय कर्म -

मनृस्मृति के अनुसार अधिकमास में तीर्थश्राद्ध, दर्शश्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान करना चाहिए। यथा-

तीर्थश्राद्धं दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सिपण्डनम्।
चन्द्रसूर्यग्रहे स्नानं मलमासे विधीयते।। (मनुस्मुति)

गर्भाधानादि संस्कार में, बालक के अन्नप्राशन समय में, गुरु-शुक्र अस्तत्व और मलमास जनित दोष नही होता है। क्योंकि इसमें काल की प्रधानता होने से उक्त कार्य मलमास में किए जा सकते हैं। यथा-

गर्भाधानादिसंस्कारे तथान्नाप्राशने शिशोः।
न तत्र गुरुशुक्रास्तमलमासादिदूषणम्।। (मुहूर्त गणपति)

अधिक मास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले कार्य वर्जित हैं। फल की आशा से मुक्त होकर सभी कार्य किए जा सकते हैं।

शास्त्रों में अधिकमास को बड़ा पवित्र माना गया है। भगवान विष्णु की उपासना इस मास में विशेष रूप से करने के कारण इस मास को 'पुरूषोत्तम' मास भी कहते हैं। इस मास में स्नान, दान, व्रत करने का फल अक्षय बतलाया गया। अतः इस मास में यथाशक्ति दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए। जिस प्रकार छोटा सा बीज बोने से वट जैसा दीर्घ विशाल वृक्ष उत्पन्न होता है, वैसे ही अधिक मास में दिया हुआ दान अन्नत फल देने वाला होता है। शास्त्रों का कथन है कि पुरूषोत्तम मास में किए जाने वाले व्रत और दान पुण्य से भगवान विष्णु, महादेव और सूर्यदेव परम प्रसन्न होते हैं और करने वाले को इस लोक में सभी सुख तथा अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आश्विन अधिक मास का फल-

जिस वर्ष आश्विन अधिक मास होता है। उस वर्ष दूसरों के शासन एवं चोरों से जनता दुखी रहती है। उत्तर भारत में सुभिक्ष, कल्याण हेतू शासन तन्त्र की सजगता रहेगी, रोगों की संभावना भी कम रहेगी। किन्तु दक्षिण भारत में दुर्भिक्ष, राजाओं का नाश तथा ब्राह्मणों की वृद्धि होती है। यथा-

आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीडिताः प्रजाः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणापथे।।
राजानस्तत्र नश्यन्ति वृद्धिब्राह्मणजातिषु।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

विक्रम संवत् २०७७ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माङ्गलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाता है तथा पुरातन गृहप्रवेश गुरु-शुक्र के अस्तकाल में भी किया जा सकता है। इस वर्ष वि.सं. २०७७ के माङ्गलिक मुहूर्तों के सन्दर्भ में कालशुद्धि का विवरण निम्न है।

१. गुरु अस्त

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ शुक्रवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवार तदनुसार २५ नवम्बर २०२० से ३० नवम्बर २०२० तक भीष्मपञ्चक रहेंगे जो माङ्गलिक कार्यों में त्याज्य हैं।

५. पौष सौर-मास

वि.सं. २०७७ में १५ दिसम्बर २०२० से १३ जनवरी २०२१ तक (मार्गशीर्ष शुक्ल १ भौमवार से पौष कृष्ण अमावस्या बुधवार तक) सौर पौष मास का समय विवाहादि संस्कारों में वर्जित है।

६. होलिकाष्टक

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-मंगल

विक्रम संवत्-२०७८
शक-संवत्-१९४३

मन्त्री-मंगल

भा०गणराज्य-संवत् ७४-७५
ईशवीय-सन् २०२१-२०२२

विद्यापीठ-पञ्चाङ्गः

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ३९

संवत्सर - राक्षस

मूल्य रु. ५०/-

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

प्रधान-सम्पादक
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्गसंकाय

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

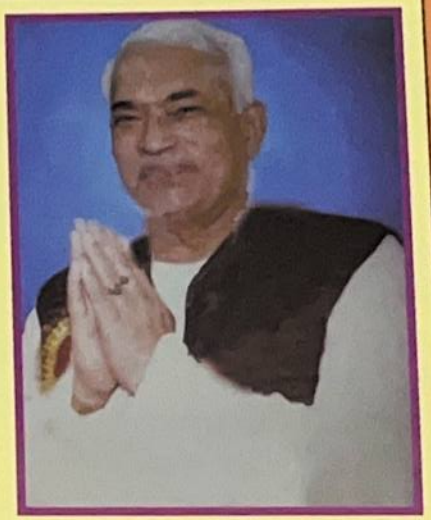

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

सम्पादक मण्डल

1. **प्रो. विनोद कुमार शर्मा** 'आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष'
2. **प्रो. नीलम ठगेला** 'आचार्या, ज्योतिष-विभाग'
3. **प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा** 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
4. **प्रो. परमानन्द भारद्वाज** 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
5. **डॉ. सुशील कुमार** 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
6. **डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी** 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
7. **डॉ. रश्मि चतुर्वेदी** 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

◆ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◆

संक्षिप्त-परिचय	१
प्रस्तावना	२-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४
संवत्सरादि फल	५-१२
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल	१२-१४
आय-व्यय बोधक चक्र	१५
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	१६-३२
विं० संवत् २०७८ के व्रत-पर्व एवं उत्सव	३३-४१
विं. सं. २०७८ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	४२-४३
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि. सं.-२०७८	४४-४५
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त	४६
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर-अमृतसिद्धि, सिद्धियोग, अमृतयोग एवं रवियोग	४७-५३
वि.सं. २०७८ दैनिक राहुकाल सारिणी	५४-५७
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी	५८-६१
वि० संवत् २०७८ के ग्रहण का विवरण	६२-६५
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि० संवत् २०७८	६६-६८
वि.सं. २०७८ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों का विवरण	६९
वि.सं. २०७८ के विवाहादि मुहूर्त्त	७०-८३
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	८४
विक्रम-संवत् २०७८ का पञ्चाङ्ग	८५-१०८
वि० संवत् २०७८ के दैनिक स्पष्ट ग्रह	१०९-१२२
दैनिक लग्न सारिणी	१२३-१२९
षड्वर्ग-चक्र	१३०-१३१
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१३२

◆ विषय-सूची ◆

विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र	१३३
नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१३४
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र	१३४
वर्षफल निर्माण-विधि	१३५
लग्नसारिणी अक्षांश	१३६-१४१
दशमलग्नसारिणी	१४२
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र, अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास	१४३
विविध मुहूर्तों का विचार	
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त	१४४
जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन का मुहूर्त्त-विचार	१४५
अन्नप्राशन,कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार	
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार	१४६-१४७
उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१४८
वर-कन्या का जन्मपत्रिका मेलापक, दुष्टभकूट, गणकूट, ग्रहकूट का परिहार	१४९
नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण का मुहूर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि	१५०
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार	१५१
जन्माक्षर-चक्र	१५२-१५४
मेलापक-सारिणी	१५५-१५८
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार	१५९
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार	१६०

◆ विक्रम संवत् २०७८ ◆

चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार	१६१-१६२
राहुमुखज्ञान, गृहारम्भ विचार, चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र	१६२-१६३
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र, कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त	१६४
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त	१६५
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त, जपनीय- चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त, बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र, ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त	१६६-१६७
मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	१६८
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर	१६९-१७०
लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि	१७०
लघुरित्थ सारिणी	१७१-१७२
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि	१७३-१७४
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	१७५
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल	१७६

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः

श्रीवाग्देवतायै नमः

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च
सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।
पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥
पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।
पञ्चसृष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥
प्राप्ते नतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्यात ध्वजारोपणम्

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवतारः। त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवतारः। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२० भोग्यवर्षाणि ४२६८८० । कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारः स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमप्रहरे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ० पुण्यं २०। वैशाखशुक्लतृतीयायां चन्द्रे

आश्विन पौर्णमास्यां कोजागरव्रतम् ।
सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक १९ अक्टूबर २०२१ ई मंगलवार को पूर्णिमा तिथि निशीथकालव्यापिनी है, अतः इस दिन कोजागरव्रत करना शास्त्रोचित होगा।

अहोई अष्टमी व्रत -

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सन्तान की दीर्घायु एवं मगल कामना के लिए अहोई माता का व्रत किया जात है। यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी तिथि में करने का विधान है-

सा चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या॥

उक्त वचनानुसार इस वर्ष दिनांक ७ नवम्बर २०२१ शुक्रवार को अष्टमी तिथि चन्द्रोदयव्यापिनी है, अतः इस दिन अहोई माता का व्रत करना प्रशस्त होगा।

होलिकादहन (दिनांक १७ मार्च २०२२ गुरुवार)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा तिथि को होलिकादहन करने का विधान है। यथा-

सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहिता ग्राह्या ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक १७ मार्च २०२२ ई. गुरुवार को पूर्णिमा तिथि प्रदोषव्यापिनी है, किन्तु इस दिन प्रदोषकाल में भद्रा व्याप्त है, तथा निशीथकाल के बाद जाकर समाप्त हो रही है। ऐसे समय में भद्रा के मुखपुच्छ का विचार कर होलिकादहन करना चाहिए। ऐसा शास्त्रीय नियम है। यथा-

परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक्
भद्रासमाप्तिस्तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिकादीपनम्॥
निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव ॥

(धर्मसिन्धु)

अतः शास्त्रवचनानुसार भद्रामुखपुच्छविचारोपरान्त दिनांक १७ मार्च २०२२ ई. गुरुवार को भद्रापुच्छभाग में भारतीय समयानुसार २२ घं. १५ मि. से २३ घं. २७ मि. तक होलिका दहन करना शास्त्रसम्मत होगा।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

विक्रम संवत् २०७८ के माङ्गलिक मुहूर्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास तथा अधिकमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माङ्गलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन

२०२१ से ०६ अक्टूबर, २०२१ तक रहेगा। इस कालावधि में माङ्गलिक कार्य वर्जित हैं।

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ रविवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-शनि

विक्रम संवत्-२०७९
शक-संवत्-१९४४

मन्त्री-गुरु

भा०गणराज्य-संवत् ७५-७६
ईशवीय-सन् २०२२-२०२३

विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ४०

संवत्सर - नल

मूल्य रू. ५०/-

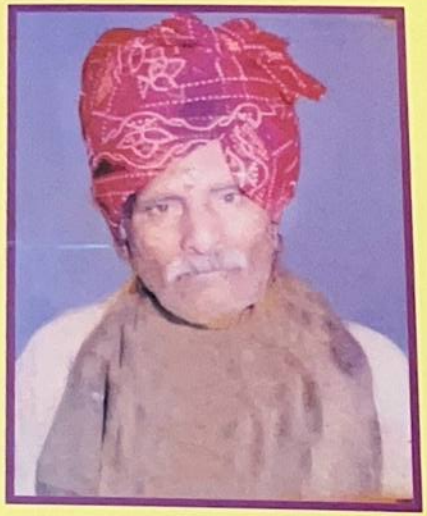

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

प्रधान-सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक :
प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

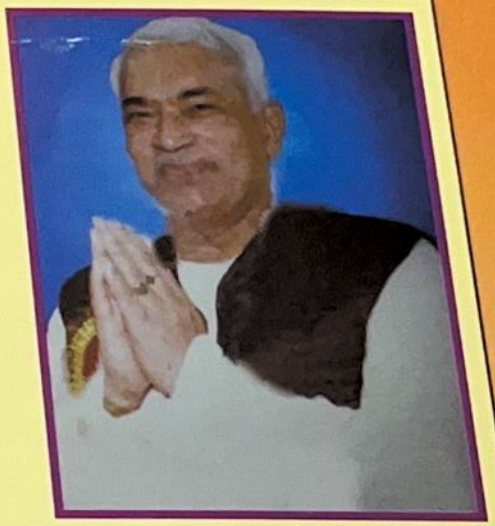

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
''राष्ट्रपति-सम्मानित''

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा 'आचार्य एवं ज्योतिष विभाग
2. प्रो. नीलम ठगेला 'आचार्य एवं अध्यक्ष ज्योतिष विभाग'
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज 'आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
5. डॉ. सुशील कुमार 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'
7. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी 'सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग'

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

♦ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ♦

संक्षिप्त-परिचय	१
प्रस्तावना	२-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४
संवत्सरादि फल	५-१२
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल	१२-१४
आय-व्यय बोधक चक्र	१५
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	१६-३२
विं० संवत् २०७९ के व्रत-पर्व एवं उत्सव	३३-४२
विं. सं. २०७९ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	४३-४४
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि. सं.-२०७९	४५-४६
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त	४७
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर, सिद्धियोग, अमृतयोग एवं रवियोग	४८-५४
वि.सं. २०७९ दैनिक राहुकाल सारिणी	५५-५८
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी	५९-६२
वि० संवत् २०७९ के ग्रहण का विवरण	६३-६५
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि० संवत् २०७९	६६-६७
वि.सं. २०७९ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों का विवरण	६८
वि.सं. २०७९ के विवाहादि मुहूर्त्त	६९-८१
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	८२
विक्रम-संवत् २०७९ का पञ्चाङ्ग	८३-१०६
वि० संवत् २०७९ के दैनिक स्पष्ट ग्रह	१०७-१२०
दैनिक लग्न सारिणी	१२१-१२७
षड्वर्ग-चक्र	१२८-१२९
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१३०

♦ विषय-सूची ♦

विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र	१३१
नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१३२
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र	१३२
वर्षफल निर्माण-विधि	१३३
लग्नसारिणी अक्षांश	१३४-१३९
दशमलग्नसारिणी	१४०
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र, अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास	१४१
विविध मुहूर्तों का विचार	
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त	१४२
जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन क मुहूर्त्त-विचार	१४३
अन्नप्राशन,कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार	
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार	१४५
उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१४६
वर-कन्या का जन्मपत्रिका मेलापक, दुष्टभकूट, गणकूट, ग्रहकूट का परिहार	१४७
नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण का मुहूर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि	१४८
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार	१४९
जन्माक्षर-चक्र	१५०-१५२
मेलापक-सारिणी	१५३-१५६
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार	१५७
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार	१५८

♦ विक्रम संवत् २०७९ ♦

चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार	१५९-१६१
राहुमुखज्ञान, गृहारम्भ विचार, चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र	१६१
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र, कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त	१६२
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त	१६३
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त, जपनीय- चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त, बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र, ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त	१६४-१६५
मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	१६६
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर	१६७-१६८
लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि लघुरित्थ सारिणी	१६९-१७०
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि	१७१-१७२
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	१७३
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल	१७४

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः

श्रीवाग्देवतायै नमः

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च

सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।

पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥

पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवतारा:। त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवतारा:। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२२ भोग्यवर्षाणि ४२६८७८ । कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतार: स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां बुधवासरे मध्याह्ने श्रवणनक्षत्रे धृतियोगे

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा का श्राद्ध (दिनांक १० सितम्बर २०२२ ई., शनिवार)

शास्त्रों में श्राद्ध के निमित्त अपराह्नव्यापिनी तिथि प्रशस्त मानी गई है। यथा-

"पार्वणे त्वपराह्नव्यापिनी ग्राह्या" ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनाङ्क ११ सितम्बर २०२२ ई. को प्रतिपदा तिथि १३ घं. १५ मि. तक व्याप्त है, तदुपरान्त द्वितीया तिथि १३ घं. १५ मि. पर प्रारम्भ होकर अग्रिम दिन १२ सितम्बर २०२२ को ११ घं. ३६ मि. पर समाप्त हो रही है। क्योंकि दिनाङ्क ११ सितम्बर २०२२ को प्रतिपदा एवं द्वितीया तिथि अपराह्नव्यापिनी है, अत: इस दिन १३ घं. १५ मि. से पूर्व प्रतिपदा का श्राद्ध एवं उसके उपरान्त द्वितीया का पार्वण श्राद्ध करना शास्त्र सम्मत होगा।

आश्विनकृष्ण अष्टमी का श्राद्ध (दिनांक १८ सितम्बर २०२२ ई., रविवार)

इस वर्ष आश्विन कृष्ण अष्टमी तिथि १७ एवं १८ सितम्बर २०२२ ई. को दोनों दिन अपराह्नव्यापिनी है। दिनांक १७ सितम्बर २०२२ ई. को १३ घं.-२९ मि. से प्रारम्भ होकर १५ घं.-५६ मि. तक अपराह्नकाल है तथा इस अष्टमी तिथि १४ घं.-१५ मि. के बाद आरम्भ होकर अपराह्न को व्याप्त करेगी। जबकि। १८ सितम्बर २०२२ ई. को अष्टमी तिथि पूर्ण अपराह्नव्यापिनी है। अत: इस दिन अष्टमी का पार्वणश्राद्ध करना शास्त्रोचित होगा।

विशेष - श्राद्धनियमानुसार १७ सितम्बर को कोई भी तिथि (सप्तमी अथवा अष्टमी) अपराह्नव्यापिनी नहीं है अत: इस दिन कोई भी श्राद्ध नहीं होगा।

विजयादशमी (दिनांक ०५ अक्टूबर २०२२ बुधवार)

विजयदशमी का पर्व अपराह्नव्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन मनाया जाता है। दशमी के साथ श्रवण नक्षत्र का योग विजयदशमी के निर्णय में विशेष विचारणीय है। इस वर्ष दशमी तिथि दिनांक ०४ अक्टूबर २०२२ को अपराह्नव्यापिनी है। और दिनांक ०५ अक्टूबर २०२२ को दशमी अपराह्न से पहले १२ घं.-००मि. पर समाप्त हो रही है अर्थात् दशमी तिथि इस दिन अपराह्नव्यापिनी नहीं है। यहाँ श्रवण नक्षत्र ही अपराह्न में विद्यमान है। ऐसी स्थिति में धर्मसिन्धु के अनुसार- यदि दशमी तिथि पहले दिन अपराह्नव्यापिनी हो तथा दूसरे दिन वह कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी हो तो दूसरे दिन अपराह्न में श्रवण नक्षत्र हो तो विजयदशमी दूसरे दिन होगा। यथा-

यदा तु पूर्वदिने एव अपराह्नव्यापिनी दशमी परदिने च मुहूर्त्तत्रयदिव्यापिनी अपराह्णात पूर्वमेव समाप्ता, परत्रैव च श्रवणयोगवती तदा परैव॥ अपराह्णे दशम्यभावेऽपि ॥ (धर्मसिन्धु)

अत: इस वर्ष ०५ अक्टूबर २०२२ ई. को विजयदशमी का पर्व मनाना शास्त्रोचित होगा।

होलिकादहन (दिनांक ०७ मार्च २०२३ सोमवार)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में होलिकादहन किया जाता है। यथा-

"सा प्रदोषव्यापिनी भद्ररहिता ग्राह्या" ॥

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा ०६ मार्च २०२३ को १६ घं.-१८ मि. के बाद आरम्भ होकर ०७ मार्च २०२३ को १८ घं.-१० मि. तक व्याप्त है। पहले दिन ०६ मार्च २०२३ को १६ घं. -१८ मि. से २९ घं.-१६ मि. तक भद्रा व्याप्त है अत: इस दिन पूरा प्रदोषकाल भद्रा से दूषित है। अग्रिम दिन ०७ मार्च २०२३ ई. को पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी है तथा भद्रा का अभाव है अत: ०७ मार्च २०२३ ई. को होलिकादहन करना प्रशस्त होगा।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-बुध

विक्रम संवत्-२०८०
शक-संवत्-१९४५

मन्त्री-शुक्र

भा०गणराज्य-संवत् ७६-७७
ईशवीय-सन् २०२३-२०२४

विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ४१

संवत्सर - पिङ्गल

मूल्य रु. ५०/-

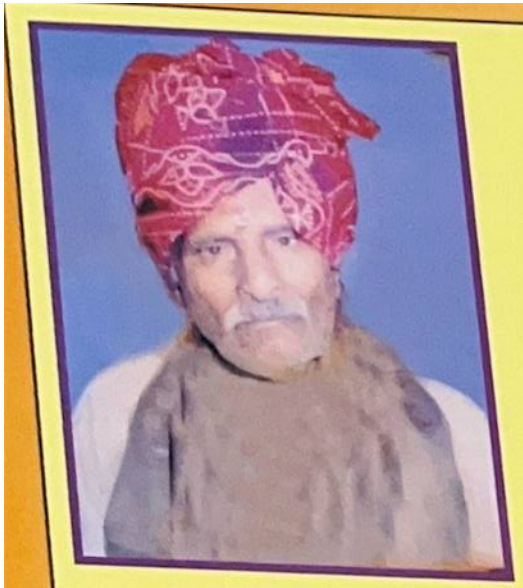

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
"राष्ट्रपति-सम्मानित"

प्रधान-सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रो. नीलम ठगेला
आचार्या, एवं ज्योतिषविभागाध्यक्षा

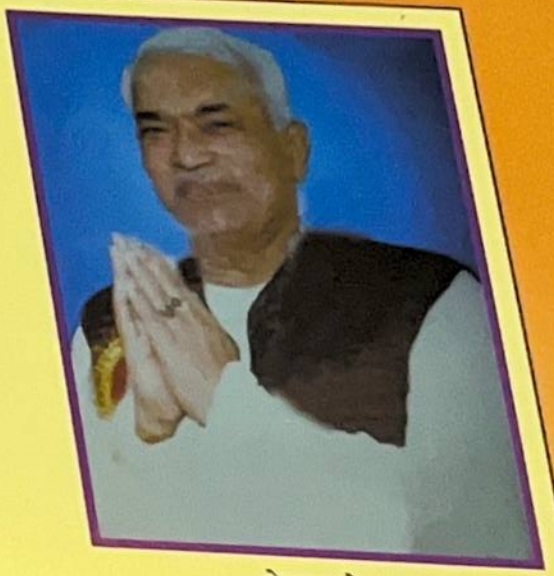

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
"राष्ट्रपति-सम्मानित"

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा आचार्य, ज्योतिष-विभाग
2. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा आचार्य, ज्योतिष-विभाग
3. प्रो. परमानन्द भारद्वाज आचार्य, ज्योतिष-विभाग
4. डॉ. सुशील कुमार सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग
5. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग
6. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी सह आचार्या, ज्योतिष-विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

◆ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◆

संक्षिप्त-परिचय	१
प्रस्तावना	२-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४
संवत्सरादि फल	५-१२
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल	१३-१५
आय-व्यय बोधक चक्र	१६
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	१७-३४
वि० संवत् २०८० के व्रत-पर्व एवं उत्सव	३३-४२
वि. सं. २०८० के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	४३-४४
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि. सं.-२०८०	४५-४६
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त	४७
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर, सिद्धियोग, अमृतयोग एवं रवियोग	५०-५६
वि.सं. २०८० दैनिक राहुकाल सारिणी	५७-६१
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी	६२-६५
वि० संवत् २०८० के ग्रहण का विवरण	६६-६८
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि० संवत् २०८०	६९-७४
वि.सं. २०८० के माङ्गलिक मुहूर्त्तों का विवरण	७५
वि.सं. २०८० के विवाहादि मुहूर्त्त	७६-८९
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	९०
विक्रम-संवत् २०८० का पञ्चाङ्ग	९१-११६
वि० संवत् २०८० के दैनिक स्पष्ट ग्रह	११७-१३०
दैनिक लग्न सारिणी	१३१-१३७
षड्वर्ग-चक्र	१३८-१३९
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१४०

◆ विषय-सूची ◆

विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र	१४१
नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१४२
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र	१४२
वर्षफल निर्माण-विधि	१४३
लग्नसारिणी अक्षांश	१४४-१४९
दशमलग्नसारिणी	१५०
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र	१५१
अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास	१५१
विविध मुहूर्तों का विचार	१५२
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त	१५२
जलपूजन, जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन के मुहूर्त्त-विचार	१५३
अन्नप्राशन,कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार	
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ	१५५
विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार	१५५
उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१५६
वर-कन्या का जन्मपत्रिका मेलापक, दुष्टभकूट, गणकूट, ग्रहकूट का परिहार	१५७
नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण का मुहूर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि	१५८
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार	१५९
जन्माक्षर-चक्र	१६०-१६२
मेलापक-सारिणी	१६३-१६६
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार	१६७
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार	१६८

◆ विक्रम संवत् २०८० ◆

चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार	१६९-१७१
राहुमुखज्ञान, गृहारम्भ विचार, चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र	१७०-१७१
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र, कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त	१७२
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त	१७३
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त, जपनीय- चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त, बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र, ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त	१७४-१७५
मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	१७६
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर	१७७-१७८
लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि लघुरित्थ सारिणी	१७९-१८०
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि	१८१-१८२
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	१८३
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में *द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल*	१८४

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः

श्रीवाग्देवतायै नमः

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च
सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।
पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥
पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।
पञ्चमष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवत् ॥

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवतारा: । त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवतारा:। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२३ भोग्यवर्षाणि ४२६८७७ । कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतार: स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां बुधवासरे मध्याह्ने श्रवणनक्षत्रे धृतियोगे

महालयाष्टकाश्राद्धोपाकर्माद्यपि कर्म यत्।
स्पष्टमासे विशेषाढयाविहितं वर्जयेन्मले॥

आचार्य ब्रहस्पति के अनुसार अग्न्याधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दानव्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, यज्ञोपवित, मांगल्य और अभिषेक मल मास में नही करना चाहिए। यथोक्तम्-

अग्न्याधानप्रतिष्ठा च यज्ञदानव्रतानि च।
वेदव्रतवृषोत्सर्गचूडाकरणमेखलाः ॥
माङ्गल्यमभिषेकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥

अधिक मास में करणीय कर्म - मनुस्मृति में कहा गया है कि तीर्थश्राद्ध, दर्शश्राद्ध, प्रेतश्राद्ध सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान अधिकमास में करना चाहिए । यथोक्तम् -

तीर्थश्राद्धं दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सपिण्डनम् ।
चन्द्रसूर्यग्रहे स्नानं मलमासे विधीयते ।

ऋषि पराशर के अनुसार अधिक मास में गर्भस्थ की मास संज्ञा, वर्द्धापन कार्य, सेवक की मास संज्ञा, प्रेत कार्य, मासिक कर्म, सपिण्डीकरण और प्रतिदिन करने वाले कार्य का त्याग नहीं करना चाहिए । यथोक्तम् -

गर्भे वार्धूषिके भृत्ये प्रेतकर्मणि मासिके ।
सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासं विवर्जयेत् ॥

मुहूर्त्तगणपति के अनुसार गर्भादानादि संस्कार में, बालक के ान्नप्राशन समय में गुरु शुक्र अस्तत्व और मलमास जनित दोष नही होता । क्योंकि इसमें काल की प्रधानता होने से उक्त कार्य मलमास के किये ा सकते है । यथोक्तम् -

गर्भाधानादिसंस्कारे तथान्नप्राशने शिशोः ।
न तत्र गुरुशुक्रास्तमलमासादिदूषणम् ॥

श्रावण "अधिक मास" का फल - विक्रम संवत् २०८० में श्रावण अधिक मास दिनांक १८ जुलाई मंगलवार से प्रारभ होकर १६ अगस्त बुध वार तक व्याप्त रहेगा । श्रावण अधिक मास का फल इस प्रकार वर्णित है -

"सर्वकामसमृद्धिः स्यात् श्रावणे शूद्रवृद्धयः॥"

अर्थात् जिस वर्ष श्रावण अधिक मास होता तो समस्त कार्यो में समृद्धि होती है। और शत्रओ की वृद्धि होती है ।

अधिकमास भगवान विष्णु एवं शिव दोनों को ही प्रिय है। इस मास में भगवान विष्णु एवं शिव दोनों की ही उपासना एवं आराधाना करने से आध्यात्मिक बल की प्राप्ति होती है अधिमास में स्नान, दान एवं व्रत करने से अनन्तफल की प्राप्ति होती है। इस मास में एक दिन व्रत करने का फल सौ वर्ष व्रत करने के फल के समान पुण्यदार्या बतलाया गया है। यथोक्तम् -

सम्यक् चीर्णेन तपसा शतवर्षमितेन च ।
यत्फलं लभते विप्र मासेऽस्मिन्नेकवासरात् ॥

आचार्यों ने समस्त पापों का नाश करने के लिए अधिक मास में व्रत, पूजन, स्नानदानादि के विविध विधान बतलाए हैं। भगवान विष्णु की उपासना हेतु विष्णुसस्त्रनाम, श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त आदि का पाठ करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। भगवान विष्णु की उपासना इस मास में विशेष रूप से करने के कारण इस मास को पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। अधिक मास में जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक व्रत-उपवास श्रीविष्णुपूजन, शिवपूजन, पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ, दानादि शुभ कर्म करता है, उसे इस लोक में मन वांछित फलों की प्राप्ति होती है और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर
(ज्योतिष-विभाग)